रमेशचंद्र महरोत्रा का छत्तीसगढ़ी बोली के क्षेत्र में योगदान

अमित कुमार पटेल[1] , डॉ. सुधीर शर्मा[2]

[1]शोधार्थी , हिन्दी विभाग , कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय भिलाई नगर जिला दुर्ग छ.ग.
[2]शोध–निर्देशक , विभागाध्यक्ष हिन्दी , कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय , भिलाई नगर जिला दुर्ग छ.ग.

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

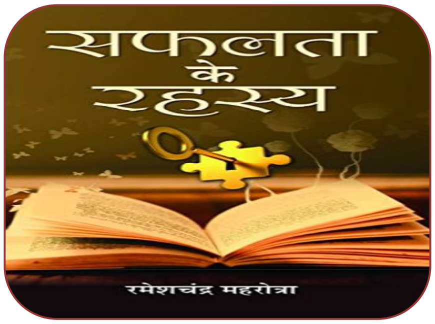

प्रस्तावना :–

छत्तीसगढ़ी बोली छत्तीसगढ़ राज्य में बोलने के कारण इसका नाम 'छत्तीसगढ़ी' पड़ा है। छत्तीसगढ़ी बोली का विकास अर्धमागधी के अपभ्रंश के दक्षिणी रूप से हुआ है। इसके मुख्यतः क्षेत्र सरगुजा, कोरिया, बिलासपुर, रायगढ़, खैरागढ़ रायपुर, दुर्ग, राजनांदगॉव कांकेर इत्यादि आते है। छत्तीसगढ़ी बोली पूर्वी हिन्दी शाखा की एक प्रमुख बोली है। ग्रियर्सन ने छत्तीसगढ़ी भाषा की उत्पत्ति को पूर्वी–हिन्दी की अन्य बोलियो के समान अर्धमागधी से माना है। अन्य विद्वान भी छत्तीसगढ़ी की उत्पत्ति को पूर्वी–हिन्दी की अर्धमागधी से मानते है। छत्तीसगढ़ राज्य अन्य राज्यों की सीमाओं से जुड़े होने के कारण अन्य प्रदेशों की बोलियों का प्रभाव भी देखा जा सकता है। इस प्रकार अनेक भाषाई राज्यों से घिरे होने के कारण यहॉ की भाषा अन्य भाषाओं के सम्पर्क में आना स्वाभाविक थी जिसके फलस्वरूप छत्तीसगढ़ी भाषा की स्वरूप अवधी और बघेली से भिन्न है। छत्तीसगढ़ी बोली में अनेक भाषाओं एवं बोलियों का सम्मिश्रण है। भारत संघ के 26वें राज्य छत्तीसगढ़ की बोली छत्तीसगढ़ी की गणना हिन्दी की पूर्वी शाखा की अवधी और बघेली के साथ की जाती है। 1 नवम्बर 2000 को, अब राजभाषा का सम्मान प्राप्त है। छत्तीसगढ़ की उपबोलियां भी छत्तीसगढ़ की प्राकृतिक बनावट के कारण अपनी विशिष्टता ग्रहण करती है।

शोध उद्देश्य

1. छत्तीसगढ़ी बोली के क्षेत्र में डॉ. महरोत्रा के योगदान का अध्ययन ।
2. छत्तीसगढ़ी बोली के विकास में डॉ. महरोत्रा के विचारधारा की आवश्यकता, उपयोगिता, एवं महत्व ।
3. छत्तीसगढ़ी भाषा को समृद्ध बनाने में डॉ. महरोत्रा के योगदान का अध्ययन ।

छत्तीसगढ़ी शब्दकोंशों पर एक नजर – डॉ. रमेशचंद्र महरोत्रा का छत्तीसगढ़ी शब्दकोश व छत्तीसगढ़ी मुहावरा कोश प्रकाशित हुआ जो आंरभिक कोशों में पहला संवेदनशील प्रयास था। भाषाविज्ञानी महरोत्रा जी का यह कोश आगे के कोशकारों का आधार ग्रंथ बना। डॉ. रमेशचंद्र महरोत्रा जी के शब्दाकोश में रायपुरी शब्दों की अधिकता देखने को मिलता है । ''शब्द के बिना भाषा की कल्पना करना निरर्थक है। वास्तव मे शब्द हमारे मन के अमूर्त भाव, हमारी इच्छा और हमारी कल्पना का वाचिक व ध्वन्यात्मक प्रतीक है।''1 सही शब्द के चयन के लिए तदकालीन विद्वानों ने शब्दों के संकलक की आवश्यकता पर बल दिया और भाषा के विकास क्रम अनवरत बढ़ता गया।

छत्तीसगढ़ में अन्य भाषाओं का प्रभावः– छत्तीसगढ़ राज्य में अन्य राज्यों से पंजाबी, सिंधी, बंग्ला, तिब्बती, आदि के आवागमन एवं मूल निवास के फलस्वरूप स्थानीय बोलियॅं पर इनका प्रभाव पड़ने लगा। छत्तीसगढ़ में लगातार आद्यौगिक विकास के कारण स्थानीय बोलियों के रंग रूप में आ''ातीत एवं अपरिमेय परिवर्तन हो रहा है। छत्तीसगढ़ क्षेत्र में प्रमुख रूप से आर्य भाषा परिवार की बोली

LBP PUBLICATION

का प्रभाव है। महरोत्रा जी का कथनानुसार– ''आर्य भाषा परिवार की बोली धीरे–धीरे अपने आस–पास की बोलियों को प्रभावित करके स्थानीय बोलियों को प्रभावित करती जा रही है। हिन्दी, उड़ीया, बंगला, मराठी, आदि भाषाओं की गणना भारत की आधुनिक आर्य भाषाओं में की जाती है। जिसके कारण छत्तीसगढ़ राज्य में इनके बोलियों के तत्व समाहित होकर प्रयुक्त किए जाने लगे है ।''**2**

छत्तीसगढ़ी बोली हिन्दी की मुख्य बोलियों मे से एक है। छत्तीसगढ़ी बोली अन्य बोलियो के घिरे होने के फलस्वरूप अनेक विशेषतओं को अपने में समाए हुए है। डॉ. महरोत्रा की रचना छत्तीसगढ़ी लेखन की मानकीकरण में छत्तीसगढ़ी की स्वर संबंधी विशेषताएँ देखने को मिलती है ।

छत्तीसगढ़ी व्याकरण–

डॉ. महारोत्रा जी ने कहा है कि छत्तीसगढ़ी भाषा का व्याकरण हिन्दी भाषा के व्याकरण से पहले लिखा गया है छत्तीसगढ़ी पूर्ण व्याकरण सम्मत भाषा है। उन्होने छत्तीसगढ़ी मानक का सुलभ व्याकरण में छत्तीसगढ़ी के मानक वर्ण माला का लेखांकन किया है। ''छत्तीसगढ़ी लेखन में ङ, ञ, श, श, क्ष, ज्ञ का उपयोग करने की जरूरत नही है। इसी प्रकार ऋः (विसर्ग), त्र, श्र आदि से भी परहेज किया जा सकता है उन्होने तकनीकी और विशिष्ट लेखन आधारित शब्दो को उदाहरण सहित स्पष्ट रूप बताया ऽ (विलुप्त अ) करऽथे (कर रहा है), और साथ पाठको के समझने के लिए हिन्दी में भी अर्थ का लेखन किया गया है।''**3** चलऽ– (चलो) , समऽझथॅ– समझता हूँ

ऍ (= हस्व ए) का प्रयोग– अतेक (इतना) , रेहेस (था,थी)
ँ (= चंद्रबिन्दु) का प्रयोग– ॲचर– (ऑचल) , रूँधब– (घेरना)
व्यंजन द्वित्व– लद्दी– (कीचड़) , जम्मा– (सब)

डॉ. महरोत्रा जी ने बताया कि छत्तीसगढ़ की एक महत्वपूर्ण विशेशता सहजीकरण का है। देशी–विदेशी भाषाओं से आगत शब्दों का उच्चारण अपनी ध्वनि प्रणाली के अनुसार किया जाता है जैसे संस्कृत से आये हलन्त शब्दो का प्रयोग छत्तीसगढ़ी में हलन्त् को हटाकर किया जाता है उदाहरण स्वरूप– हिन्दी रूप वरन् , महान् छत्तीसगढ़ी मे क्रमशः बरन , महान आदि ।

रेफ लगे शब्दों का उच्चारण लेखन क्रमश गर्म–गरम, कर्म–करम, नर्म–नरम आदि के रूप में किया जाता है। उन्होने छत्तीसगढ़ी में लिंग भेद, उपसर्ग, प्रत्यय, कृदन्त आदि के विस्तृत विवरण हिन्दी उदाहरण के साथ समझाया गया है जिससे अन्य भाषा–भाषी पाठको को समझने में असुविधा न हो। डॉ. महरोत्रा जी ने संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण, संबंध बोधक, समुच्चय बोधक और विस्मयादि बोधक आदि का सरलता पूर्वक लेखांकन किया है।

छत्तीसगढ़ी शब्दकोशः– डॉ. रमेशचंद्र महरोत्रा जी का छत्तीसगढ़ी शब्दकोश प्रकाशित हुआ । उन्होने बताया की किसी भी भाषा का आधार शब्दो का संग्रह है जिसे शब्दकोश कहते है किन्तु शब्दकोश शब्दो की संग्रह मात्र नही है यह शब्दो के वर्ग विन्यास, अर्थ, प्रयोग आदि का वाचक ग्रंथ है। उनका कहना है कि ''भाषा का विकास तब तक संभव नही है जब तक भाषा का शब्दकोश समृद्ध नही होगा।''**4**

उन्होने छत्तीसगढ़ी शब्दकोश में पाठको के लिए छत्तीसगढ़ी भाषा–भाषी शब्दो की उत्पत्ति, उनकी व्याकरणिक महत्व एवं अर्थ परिवर्तन में सूक्ष्म अंतर को स्पष्ट किया है। उन्होने लोक प्रचलित शब्दो को भी शामिल किया है। उनका मानना है कि शब्द कोश की महत्वपूर्ण विशेशता यह होनी चाहिए। कि शब्दो के अर्थ के साथ उसकी व्याख्या भी हो जिससे पाठको एवं लेखकों को समझने में आसानी हो। इस छत्तीसगढ़ी शब्दकोश में अनेकार्थी और पर्यायवाची शब्दों को पृथक–पृथक रूपों में समझाने का प्रयास किया गया है। डॉ. महरोत्रा का कथनानुसार– ''हिन्दी भाषा'' तो उस पूरे पेड़ का नाम है, जिसकी जड़ें उस का पुरातन है और मोटी डाले, शाखाएँ, टहनियॉ और पत्ते उसकी वर्तमान उपभाषाएँ बोलियॉ, उपबोलियॉ और व्यक्ति बोलियॉ है। पेड़ के तने को हम 'हिन्दी भाषा' का 'मानक हिन्दी' स्तंभ कह सकते है। जो हर व्यक्ति बोली के पत्ते तक को अपने से जोड़े रखता है।''**5**

छत्तीसगढ़ी मुहावरा कोश– डॉ. रमेशचंद्र की रचना ''छत्तीसगढ़ी मुहावरा कोश'' छत्तीसगढ़ी में प्रकाशित पहला मुहावरा कोश है। उन्होने छत्तीसगढ़ के विविध क्षेत्रो में बोले जाने वाले मुहावरों का संकलन इस ग्रंथ में किया है। उन्होने छत्तीसगढ़ी और हिन्दी दोनो में मुहावरों का अर्थ एवं प्रयोग स्पष्ट किया है। डॉ. महरोत्रा के मुहावरा कोश में प्रयुक्त मानक हिन्दी के बीच पौराणिक और ऐतिहासिक नामों को तो यथावत रखा गया है। छत्तीसगढ़ी मुहावरा लिखने के बाद उसका यथासांभव निकटतम मानक हिन्दी प्रतिरूप को कोष्ठक के अंदर लेखांकन किया गया है। छत्तीसगढ़ी और मानक हिन्दी के मुहावरे के स्वरूप में कोई भेद नही मिलने पर यथावत लिखा गया है– जैसे– ऑच लगना (यथावत्) , कसर निकालना (यथावत्) , उन्होने छत्तीसगढ़ी और मानक हिन्दी की रचनात्मक तुलना की है यदि किसी मुहावरे में एक से अधिक भिन्न अर्थ है तो उन्हे क्रमांक देकर पृथक्–पृथक् उदाहरणो से लेखांकन किया है। मुहावरे से मिलते जुलते अर्थो के लिए एक ही उदाहरण दिया गया है।

जैसे– अंचरा ढाकना हिन्दी में (आंचल ढकना)–

1. अर्थः इज्जत करना, लिहाज करना, ख्याल करना। उदाहरणः– कुरा ससुर आवऽथे अंचरा ढांकले। (जेठ आ रहे है, उनकी इज्जत करो)
2. अर्थः दूध पिलाना उदाहरणः– लइका हर भूख म कल्हरऽथे, अंचरा ढाक दे। (बच्चा भूख से व्याकुल हो रहा है, दूध पिला दो) यहा पर स्पष्ट है कि अंचरा ढाकना के दो पृथक–पृथक अर्थ है जिसे क्रमांक देकर लेखांकन किया गया है।

डॉ. महरोत्रा जी ने बताया है यह मुहावरा कोश छत्तीसगढ़ी भाषियों के लिए केवल रूचि और आनंद की वस्तु हो सकता है, पर अन्य लोगो के लिए यह ज्ञान की वस्तु है।

छत्तीसगढ़ी व्याकरण के लेखन में योगदान

हिन्दी भाषा को देवनागरी लिपि में मान्यता मिली हैं छत्तीसगढ़ बोली को भी देवनागरी लिपि में लिखा जाता है। देवनागरी लिपि की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि हम जैसे शब्दों का उच्चारण करते है उसी रूप में उसे लिखते है। अतः हिन्दी की तरह छत्तीसगढ़ी में भी जो वर्ण है उसे उच्चारित करके उसी रूप में लिखा जाता है। इसके बाद भी हिन्दी और छत्तीसगढ़ी के वर्णमाला में अंतर हैं ।

हिन्दी और छत्तीसगढ़ी के वर्णमाला में अंतर –

हिन्दी में उपयोग होने वाल 'ण' वर्ण का उपयोग छत्तीसगढ़ी में न् के रूप में होता है।

जैसे– बाण – बान , रावण– रावन

इसी प्रकार अक्षर क्ष, त्र, ज्ञ, श्र ये हिंदी के चारो संयुक्त अक्षर को छत्तीसगढ़भ में फैलाकर बोले व लिखे जाते है। जैसे

क्ष– कक्षा – कच्छा
त्र– त्रिबेणी – तिरबेनी
श्र– श्रवण – सरवन
ज्ञ– ज्ञान – गियान

जहां हिंदी में अधा अच्छर का उपयोग होता है वहॉ छत्तीसगढ़ी में उसे पूरा करके बोले व लिखे जाते हैं।

जैसे– लग्न – लगन , किस्म – किसम , धर्म – धरम , प्रकार – परकार

हिन्दी के व को छत्तीसगढ़ में ब के रूप में उच्चारण करते व. लिखते है।

जैसे– वचन , विचार , पर्व , वन को क्रमशः बचन, बिचार, परब, और बन आदि लिखा जाता है

इसी प्रकार से हिंदी में लिखे जाने वाले वर्ण श, श को छत्तीसगढ़ी में स के रूप में उच्चारण करते व लिखते है।

जैसे– त्रिशूल – तिरसूल
आशीष – असीस
अषाढ़ – असाढ़

आकाश– अकास

हिन्दी के 'ऋ' के स्थान पर छत्तीसगढ़ में उसे पूरा अक्षर बनाकर लिखें एवं बोले जाते है

जैसे– हृदय – हिरदे

ऋषि – रिसी

कृपा – किरपा

पृष्ठ – पिस्ट

हिन्दी में र का आधा रेफ (–ˊ) बनते है वह छत्तीसगढ़ी में केवल र के रूप में लिखा जाता है।

जैसे– फर्क – फरक

नर्क – नरक

वर्ष – बरस

किसी के नाम लिखने में हिन्दी के वर्णो को ज्यों का त्यों उपयोग छत्तीसगढ़ में करते है।

जैसे– शंकर – शंकर

शिवराम – शिवराम

धनुष – धनुष

हिन्दी के ड़ और ढ़ को छत्तीसगढ़ में ह और र के रूप में उपयोग में लाते है

जैसे– कड़ाही – कराही

कचड़ा – कचरा

जोड़ना – जोरना

इसी प्रकार ल को छत्तीसगढ़ में र के ही रूप में उपयोग करते है

जैसे– अलसी – अरसी

कुदाली – कुदारी

केला – केरा

थाली – थारी

हिन्दी के कुछ शब्दों का बहुत ही कम वर्णो में बदलाव देखने को मिलता है

जैसे– यश – जश

नीम – लीम

शाग – साग

हिन्दी में बहुत से ऐसे शब्द है जिसके छत्तीसगढ़ी में ज्यों का त्यों लिया जाता है। फिर भी नया शब्द बनाने का जो तरीका है। वह छत्तीसगढ़ी में भिन्न है।

जैसे– लिखना – लिखई, लिखौनी, लिखइय्या

पढ़ना – पढ़ई, पढ़ौनी, पढ़इया, पढ़ंता

इसी प्रकार अंग्रेजी के कुछ शब्दों को थोड़ा सा बदलकर छत्तीसगढ़ी में अपनाया है

जैसे–

फार्म – फारम

स्कूल – इस्कूल

स्टेशन – ठेसन

जोकर – जोक्कड़

उपरोक्त लेखन के आधार पर हम इस निष्कर्ष के रूप में कह सकते है कि छत्तीसगढ़ी भाषा समुद्र की तरह अथाह है जिसका थाह पाना मुश्किल है।

शब्द रचना :–

डॉ. रमेशचंद्र महरोत्रा की पुस्तक में शब्द रचना की दृष्टि से निम्नलिखित विशेशताएं देखने को मिलती है।

- छत्तीसगढ़ी शब्दों का निर्माण व्यंजन या स्वर से प्रारम्भ होता है।

LBP PUBLICATION

- छत्तीसगढ़ी शब्द के आरम्भ में एक से अधिक व्यंजन नहीं आ सकते क्योंकि छत्तीसगढ़ी में ध्वनि की व्यवस्था नहीं आती है। उसी प्रकार छत्तीसगढ़ी शब्दों के आरम्भ में दो से अधिक स्वर को नहीं लिखा जा सकता।
- छत्तीसगढ़ी में व्यंजन में ड़, ढ, ण, त्र, ज्ञ से कोई शब्द प्रारम्भ नहीं होता है।

वाक्य रचना–

वाक्य रचना की दृष्टि से छत्तीसगढ़ी की महत्वपूर्ण विशेशता है जिसका उल्लेख किया गया है–

- छत्तीसगढ़ी में लम्बे वाक्यों को तोड़कर अधिकतर छोटे–छोटे वाक्य देखने को मिलते है।
- छत्तीसगढ़ी में मिश्र एवं संयुक्त वाक्य कम ही देखने को मिलता हैं
- छत्तीसगढ़ी वाक्य रचना में शब्दों का क्रम, कर्ता, कर्म और क्रिया के क्रमानुसार होता हैं

संज्ञा संबंधी विशेषताएँ :–

हिन्दी की तरह छत्तीसगढ़ी में भी संज्ञा के पांच भेद बताएँ गये है–

1. व्यक्ति वाचक संज्ञा – देवारी, दुकालू, रइपुर, बेलासपुर
2. जातिवाचक संज्ञा – बैला, कुकुर, गांव, किताब
3. पदार्थ वाचक संज्ञा – पिसान, चाऊँर, कठवा, घिऊ
4. समूह वाचक संज्ञा – बरात, पंचईत, खइरखा
5. भाव वाचक संज्ञा – उजियार, लबरी, थकासी, मितानी

सर्वनाम संबंधी विशेषताएँ –

हिन्दी की तरह छत्तीसगढ़ी में भी सर्वनाम के 6 प्रकार बताया गया है।

1. पुरूष वाचक सर्वनाम– छत्तीसगढ़ी में हिन्दी की भांति पुरूष वाचक सर्वनाम की तीन रूप प्रचलित है।

- उत्तम पुरूष– एकवचन– मे, मोर, मोला
  बहुवचन– हमन, हमार, हमन ल
- मध्यम पुरूष :– एकवचन– तें, तोर, तोला
  बहुवचन– तुमन, तुंहर, तूमन ल
- अन्य पुरूष– एकवचन– ओं, ओंकर, ओला
  बहुवचन– ओमन, अंकर, ओमन ल

बातचीत करते समय वक्ता उत्तम पुरूष, श्रोता मध्यम पुरूष एवं जिसके बारे में बोला जा रहा वह अन्य पुरूष होता है।

जैसे – ✦ तुमन छत्तीसगढ़ी सनीमा देखे बर जाहूं।
✦ हमन फुटबाल खेलथन।

		एकवचन	बहुवचन
2. संबंध वाचक सर्वनाम	–	जे	जिन, जेमन
3. प्रश्नवाचक सर्वनाम	–	कोन	कोनमन
4. अनिश्चयवाचक सर्वनाम	–	कोई	कोनो कोनो
5. निजवाचक सर्वनाम	–	अपन	अपन

क्रिया संबंधी विशेषता– छत्तीसगढ़ी में भी हिन्दी की भांति क्रिया के दो वचन और तीन पुरूष देखने को मिलते है।

- छत्तीसगढ़ी में दो प्रकार की क्रियाओं का प्रयोग होता है।
- छत्तीसगढ़ी में सकर्मक क्रिया– अगोरना, कोचकना, डोहरना, ओरियाना, टोरना, जोजियाना।

LBP PUBLICATION

- छत्तीसगढ़ी अकर्मक क्रिया – अईलाना, खुसरना, झूपना, नरियाना, तमकना, भसकना ।

छत्तीसगढ़ी में हिन्दी की तरह क्रिया के काल तीन भाग में विभाजित किया गया है–

1. वर्तमान काल– सामान्य वर्तमानकाल, अपूर्ण वर्तमानकाल, पूर्ण वर्तमानकाल,
2. भूतकाल– सामान्य भूतकाल, अपूर्ण भूतकाल, पूर्ण भूतकाल,
3. भविष्यकाल– सामान्य भविष्यकाल, अपूर्ण भविष्यकाल, पूर्ण भविष्यकाल

विशेषण संबंधी विशेषताएँ – हिन्दी का भांति छत्तीसगढ़ी में भी विशेशण के पांच प्रकार होते हे–

1. गुण वाचक विशेषण– गिनहा, झेंझरा, करिया, पातर
2. परिमाण वाचक विशेषण– सब्बो, थोरिका, चिटकुन, अड़बड़
3. संख्या वाचक विशेषण–पांचो, बीस, एकठन, तीन कोडी, तीनगुन, बारन
4. प्रश्न वाचक विशेषण– कोन, काकर, कते
5. संकेत वाचक विशेषण–ये, अईसन, वो

क्रिया विशेषण संबंधी विशेषताएं–

हिन्दी की भांति छत्तीसगढ़ी में भी सात प्रकार के क्रिया विशेषण देखने को मिलता है

1. काल वाचक क्रिया विशेषण– संझा, आज–काली, बिहनिया, परनदिन
2. स्थान वाचक क्रिया विशेषण– एती, वोती, इंहा, उहा, खाल्हे, जिहां–तिहां, एमेर, कोन मेर
3. रीतिवाचक– लकर–धकर, अईसने, तईसने, हलु–हलु, ओसरी–पारी
4. कारण वाचक–एकरे सेती, काबर कि, त, इही पाय

लिंग संबंधी विशेषताएं–

हिन्दी की तरह छत्तीसगढ़ी में भी लिंग निर्धारण हेतु अलग शब्द 'नर' या 'मादा', 'ऍंडरा' या 'एड़री', 'डउका' या 'डउकी' के संकेत के रूप में प्रयोग किया जाता है–

जैसेः– पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
नर गोड़ेला	मदा गोड़ेला
ऍंड़रा चीतल	एंड़री चीतर
डउका कीरा	डउकी कीरा

छत्तीसगढ़ी में बहुवचन बनाने के लिए शब्द के अंत में –मन, –अन, –वन, –यन, – इन, –ऍन, – न, मनन लगाकर बहुवचन बनाया जाता है।

जैसे– लईका – लईकामन
डउका – डउकामन
देरानी – देरानीमनन
सखी – सखिन

निष्कर्ष :–

डॉ. महरोत्रा का छत्तीसगढ़ी व्याकरण को समृद्ध बनाने के लिए महत्वपूर्ण योगदान रहा। इस तरह के कई उपसर्ग और प्रत्यय उनकी रचना मानक छत्तीसगढ़ी का सुलभ व्याकरण में पाठकों एवं लेखकों को छत्तीसगढ़ी सीखने, समझने एवं पढ़ने को मिलता हैं साथ ही छत्तीसगढ़ी का हिन्दी में अर्थ भी स्पष्ट बताया गया है। जिससे पाठक लेखक एवे श्रोता को छत्तीसगढ़ी व्याकरण सीखने में सहज हो सके। अधिकतर छत्तीसगढ़िया सहज रूप में छत्तीसगढ़ी को बोल लेते है। लेकिन लिखने एवं पढ़ने में कठिनाई महसूस करते है। जबकि छत्तीसगढ़ी देवनागरी लिपि में ही पढ़े या लिखे जाते है। छत्तीसगढ़ियों में अभ्यास एवं रूचि की

LBP PUBLICATION

कमी के कारण असहज महसूस करते है। जबकि छत्तीसगढ़ी छत्तीसगढ़ियों के आत्मा की भाषा है। इसी कमी को ध्यन में रखते हुए डॉ. महरोत्रा जी ने कई छत्तीसगढ़ी पुस्तकों की रचना की जो वरदान स्वरूप है।

संदर्भग्रंथ :-

1. महरोत्रा, रमेशचंद्र, छत्तीसगढ़ी–शब्दकोश, रायपुर, भाषिका प्रकाशन 1982.
2. महरोत्रा, रमेशचंद्र, छत्तीसगढ़ी–मुहावरा–कोश, नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1991.
3. महरोत्रा, रमेशचंद्र, छत्तीसगढ़ और छत्तीसगढ़ी, रायपुर, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, 1993.
4. महरोत्रा, रमेशचंद्र, छत्तीसगढ़ और छत्तीसगढ़ी, 1193.
5. महरोत्रा, रमेशचंद्र, मानक छत्तीसगढ़ी का सुलभ व्याकरण, छत्तीसगढ़ भाषा प्रचार समिति, 2002.
6. महरोत्रा, रमेशचंद्र, छत्तीसगढ़ी परिचय और प्रतिमान, रायपुर, वैभव प्रकाशन, 2002.
7. महरोत्रा, रमेशचंद्र, छत्तीसगढ़ी लेखन का मानकीकरण, रायपुर, वैभव प्रकाशन 2002.

LBP PUBLICATION